साहित्यिक पत्रकारिता की समकालीन प्रासंगिकता

डॉ.भावना शुक्ल
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज दिल्ली
दिल्ली, भारत

सारांश

पत्रकारिता का मूल है साहित्यिक पत्रकारिता. पड़ताल करने पर पाएंगे कि पत्र-पत्रिकाओं के अधिकांश संपादक पहले साहित्यकार रहे और बाद में संपादक. प्रश्न है कि 'साहित्यिक पत्रकारिता की समकालीन प्रासंगिकता' इसे इस तरह समझा जा सकता है की सरिसम सबका हित करने वाला साहित्य कालातीत होता है. और शाश्वत है वह तो हर युग और हर काल में प्रासंगिक ही रहेगा. आज के युग की कोई समस्या कोई प्रश्न ऐसा नहीं है जिसका समाधान साहित्य के पास न हो. अब हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम साहित्य के समाधान के लिए

किस दृष्टि से विचार करें, भारत में प्रथम प्रकाशित पत्र 1780 ईस्वी में 'हिक्कीज गजट' जो भारत में प्रथम प्रकाशित पत्र था, जिसकी भाषा अंग्रेजी थी .30 मई 1826 ई. का एक ऐतिहासिक दिन था जब हिंदी पत्रकारिता का आगाज़ हुआ. हिंदी भाषा में पहला पत्र "उदन्त मार्तण्ड" का कलकत्ते से प्रकाशित हुआ.जिसे कानपुर निवासी पं॰ जुगल किशोर शुक्ल ने निकाला . इसके साथ ही साथ शुरू हुई एक नई यात्रा "लेखनी और साहित्य के माध्यम से समाज को आईना दिखाने की", आम जन की आवाज बुलंद करके उसे जन जन तक पहुँचाने की. तब से शुरू हुई ये यात्रा कालखंड के विभिन्न चक्करों से गुजरते हुए वक़्त की भट्टी में तपकर स्वर्ण से कुंदन की भांति होता गया. और आज अभी भी निरंतर हो रहे तीव्र परिवर्तनों को भी साथ-साथ लेकर अपनी अविराम यात्रा कर रहा है. और जन-जन की ज्ञान पिपासा को शांत करने और उनकी आवाज को बुलंद कर रहा है.

"आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी "हिन्दी साहित्य का इतिहास" (मुद्रण: सं0 1995) में लिखते हैं "उदन्त मार्तण्ड" के बाद काशी के "सुधाकर" और आगरा के "बुद्धिप्रकाश" आदि के प्रयासों से "अदालती भाषा उर्दू बनाई जाने पर भी,20वीं शताब्दी के आरंभ के पहले से ही (यानी सन् 1840-45ई0 के पहले से ही) हिन्दी खड़ी बोली गद्य की परंपरा हिन्दी साहित्य में अच्छी तरह चल पड़ी ; उसमें पुस्तकें छपने

लगीं, अखबार निकलने लगे। कहना ना होगा कि इन अखबारों के अर्ध-साहित्यिक रूप से ही क्रमशः साहित्यिक पत्रकारिता का विकास हुआ"

भारत के इतिहास को सुनहरा बनाने में साहित्यिक पत्रकारिता ने अपना विशेष योगदान दिया है .स्वतंत्र आंदोलन से लेकर आजादी दिलाने तक साहित्यिक पत्रकारिता द्वारा हिंदी भाषा का मानकीकरण और उसका प्रचार प्रसार,राष्ट्रीय भावना का जागरण साहित्य की विभिन्न विधाओं में संवर्धन और संरक्षण, नए रचनाकारों के जन्मदाता, हिंदी को विश्वविद्यालयों में स्थान दिलाना, स्वाधीन चेतना का संचार अधिकारों की लड़ाई आदि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया. साहित्यकार डॉ नगेंद्र के अनुसार यदि हम कहें विश्वविद्यालय में हिंदी को स्थान नहीं मिला था. इसलिए उसे ज्ञान के साहित्य का माध्यम बनाने की दिशा में प्रयास किया गया. इन संस्थाओं में सरस्वती जैसी पत्रिका के द्वारा के ही किया गया .साहित्य का स्वर क्रमशः गम्भीर हुआ और उसमें दायित्वबोध जागा। साहित्य को शिष्ट समाज में प्रवेश पाने के योग्य समझा जाने लगा और सब मिलाकर हिंदी को व्यापक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।'1

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में बाबूराव विष्णु पराड़कर जो विद्वान पत्रकार रहे.इन्होंने आधुनिक हिंदी के मानक रूप को अपने

समाचार पत्र के पन्नों में पूर्ण रूप से आकार प्रकार देने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया आज वर्तमान में जो हिंदी लिखी पढ़ी जाती है उस पर कई प्रभावों के साथ-साथ पराड़कर जी का भी प्रभाव दृष्टिगत होता है हिंदी भाषा का जो 200 वर्षों में आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ है उसमें हिंदी पत्रकारिता के महत्वपूर्ण योगदान को हम नकार नहीं सकते. हिंदी के विकास और प्रसार में हिंदी प्रेस के कई सिपाहियों ने अपनी भाषा को अलग-अलग दृष्टिकोण के साथ वर्तमान विश्व के लिए तैयार किया हिंदी को मानक रूप मिलने के साथ साथ हिंदी सामाजिक राजनैतिक शैक्षणिक साहित्यिक और बौद्धिक भूमिका को भी एक स्थिर जमीन प्राप्त हुई.

साहित्यिक पत्रकारिता में भारतेन्दु से प्रेरणा पाकर पंडित बालकृष्ण भट्ट ने "हिंदी प्रदीप" का प्रकाशन किया जो इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास था. साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान महावीर द्विदी द्वारा सम्पादित सरस्वती का रहा . प्रेमचंदजी एक बेहतरीन कहानीकार के साथ साथ एक कुशल सम्पादक भी थे. उन्होंने "हंस" पत्रिका के जरिये साहित्यकारों की एक नई पीढ़ी को तैयार किया. साहित्यिक पत्रकारिता की यह भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है कि वो साहित्य के प्रचार प्रसार के साथ साथ साहित्यकारों को भी शिक्षित करे और नई पीढ़ी को भी तैयार

करे . हंस पत्रिका इस दिशा में पूर्णतया सफल रही. साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में एक कीर्तिमान रचा.

हिंदी पत्रकारिता में से ही गद्य साहित्य का विकास हुआ और साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत हुई. डॉ रामविलास शर्मा ने कहा है की " भारतेन्दु से लेकर प्रेमचंद तक हिंदी साहित्य की परम्परा में यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी बड़े साहित्यकार पत्रकार भी थे. "

आजादी से पूर्व और साहित्यिक पत्रकारिता के शुरूआती दौर में "सरस्वती" (महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन-काल की), "माधुरी", "मतवाला", "सुधा", "चाँद", "हंस"(प्रेमचंद के संपादन-काल से लेकर अमृत राय-रामविलास शर्मा-शिवदानसिंह चौहान के प्रगतिवादी-काल तक का), "विप्लव", "नय साहित्य", "रूपाभ" सहित ऐसी ही अनेक छोटी-बड़ी साहित्यिक पत्रिकाओं ने साहित्यिक पत्रकारिता को विविध आयाम दिए .

और आज़ादी के बाद "कल्पना", (बदरी विशाल पित्ती एवं अन्य), "समालोचक" (रामविलास शर्मा), "प्रतीक" (अज्ञेय), "नया पथ" (यशपाल एवं अन्य), "कृति" (श्रीकांत वर्मा), "आलोचना" (नामवर सिंह), "वसुधा" (हरिशंकर परसाई), "कहानी" (श्रीपत राय), "लहर" (प्रकाश जैन और मनमोहिनी) और "नई कहानियाँ" (कमलेश्वयर, फिर भीष्म साहनी) जैसी श्रेष्ठ) साहित्यिक पत्रिकाओं तथा

व्यावसायिक घरानों की प्रतिष्ठानी और सेठाश्रयी पत्रिकाओं –"धर्मयुग", "साप्ताहिक हिन्दुस्तान", "ज्ञानोदय", "सारिका", "निहारिका" और "कादम्बिनी" आदि पत्रिकाओं ने साहित्यिक पत्रकारिता की उस बुनियाद को और भी मजबूत किया.

भारतेन्दु और प्रेमचंद के अलावा यही बात पं0 महावीरप्रसाद द्विवेदी, निराला, मुक्तिबोध, यशपाल, हरिशंकर परसाई, नामवर सिंह और नंदकिशोर नवल के बारे में भी कही जा सकती है। साहित्य और पत्रकारिता के इन घनिष्ठ संबंधों की ओर संकेत करते हुए प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखते हैं कि "हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में पत्रकारिता की अनन्य देन रही है। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से युग-प्रवृत्तियों का प्रवर्तन हुआ है, विभिन्न विचारधाराओं का उन्मेश हुआ है और विशिष्ट प्रतिबाओं की खोज हुई है। वस्तुतः साहित्य और पत्रकारिता परस्पर पूरक और पर्याय जैसे हैं। शायद इसीलिए लोग पत्रकारिता को "जल्दी में लिखा हुआ साहित्य" और साहित्य को "पत्रकारिता का श्रेष्ठतम रूप" भी कहते हैं। साहित्यिक पत्रकारिता के प्रसंग में तो यह मणि-काँचन-योग और भी प्रत्यक्ष है

पत्रकारिता का कोर्स आज भी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में बहुत ही सुचारू रूप से चलाया जा रहा है देखा जाए तो पत्रकारिता की प्रासंगिकता कई दृष्टिकोण से आज भी बरकरार है अध्यापन कार्य के

लिए विश्वविद्यालयों में प्रकाशन अंकों की अनिवार्यता भी इसकी प्रासंगिकता का एक मजबूत सबूत है पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या दिन प्रतिदिन दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही जा रही है प्रिंट से अब डिजिटल हो गया हो इसके माध्यम का स्वरूप भी बदल गया हो लेकिन आज भी छापेखाने पर ताला नहीं पड़ा है बल्कि अनेक प्रकाशन संस्थानों की संख्या भी बढ़ गई है.

एक रोचक प्रसंग .. सेंट फॉक्स साहित्यिक पत्रकारिता के आरंभ का बड़ा दिलचस्प विवरण देते हुए बताते हैं कि रेनाडो नामक पेरिस के एक डॉक्टर अपने अस्पताल के रोगियों के मन-बहलाव के लिए अद्भुत घटनाओं, रोचक किस्सों, अलौकिक विवरणों और दिलचस्प खबरों को जमा करके बीमारों को पढ़ने देने लगे। डॉ रेनाडो का विशवास था कि ऐसे मनोरंजन से रोगियों को शांत और प्रसन्न रखा जा सकता है और उन्हें शीघ्र निरोग भी किया जा सकता है। कहना न होगा कि उन्हें इसमें आशातीत सफलता भी मिली।

इससे उत्साहित होकर, पेरिस प्रशासन की अनुमति से, रेनाडो ने 1632 ई0 से ऐसी सामग्री संकलित कर एक नियमित साप्ताहिक पत्रिका शुरु कर दी । (जन-संचार एवं पत्रकारिता"शोध प्रबंध)
डॉ रेनाड़ो की वैचारिकता यहाँ भारतवर्ष हास्य व्यंग्य पत्रिकाओ में जैसे मतवाला, रंग, चकल्लस, नोंक झोक में देखा जा सकता है।

एक दो पत्रिकाओं से शुरुआत हुई इस साहित्यिक पत्रकारिता की यात्रा ने विभिन्न आयाम देखे। अगर कहा देखा जाये तो सही में मायने में साहित्यिक पत्रकारिता का एक नव युग अब प्रारम्भ हुआ है। आज शिक्षा के साथ साथ साहित्य का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ है। हजारो पत्र पत्रिकाओं का निरंतर प्रकाशन हो रहा है और पाठको तक पहुंचाई जा रही है। और समाज के घटित हर तरह के घटनाकर्म पर साहित्यिक रचनाओं का लेखन, प्रकाशन और प्रसारण निरंतर सुचारू रूप से हो रहा है।

आज के इंटरनेट युग में भी लगातार नई नई पत्रिकाओं के प्रकाशन से ये साबित होता है की साहित्य के प्रति जनमानस आज भी रूचि रखता है और इसके प्रति समर्पित है। इंटरनेट भी अब इससे अछूता नही है। हर ई पत्रिकाओ और ई बुक के चलन के बाद इंटरनेट पर हजारो पत्र पत्रिकाएँ वेब साईट और निजी ब्लोग्स आदि के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में निरंतर प्रसारित हो रही है। आज हर पत्र पत्रिका अधिक से अधिक पाठको तक पहुँचने के लिए इन्टनेट पर उपलब्ध होने से विस्तार हो रहा है। और आसानी से उपलब्धता के कारण जनमानस की भी रूचि इन पत्र पत्रिकाओं के प्रति बढ़ रही है। इस के साथ साथ पत्र पत्रिकाएँ एक सिमित दायरे से बाहर निकल कर सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम लहरा रही है। आज 21 वी सदी में साहित्यिक

पत्रकारिता तेजी से अपने पंख पसार कर पत्रकारिता के विस्तृत गगन पर उड़ान भर रही है।

कतिपय अंग्रेजी दां पत्रकारों की दृष्टि में हिंदी पत्रकारिता का भले कोई मूल्य न हो किन्तु डॉ राजकुमार सुमित्र के मतानुसार वह साहित्यिक पत्रकारिता ही है जिसने हिंदी समाचार पत्रकारिता और अंग्रेजी पत्रकारिता को प्राणवायु दी है और दे रही है।

साहित्यिक पत्रकारिता समाचारों के एक पक्षीय आँगन से निकलकर बहुपक्षीय होती है । इस पत्रकारिता में साहित्य का अर्थ केवल कविता कहानी तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें सभी विधाओं का भी समावेश होता है । हम कह सकते है की साहित्यिक पत्रकारिता मरणशील नहीं अपितु जीवंत है और हर युग में यह प्रभावशील रही है और रहेगी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिंदी साहित्य का इतिहास- सं. डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक्स नोएडा, 42 वाँ पुनर्मुद्रण 2012, पष्ठ सं. 513*
2. *दिवंगत हिंदी सेवी ...छेमचंद सुमन*
3. *"समाचारपत्रों का इतिहास", अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ; ज्ञानमण्डल लि0, वाराणसी (द्वितीय सं0*
4. *दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के चेन्नई अधिवेशन*

(16/11/18)डॉ.राजकुमार सुमित्र के भाषण का अंश .

5. *लखनऊ विश्वविद्यालय की "जन-संचार एवं पत्रकारिता" के विषय को प्रथम पी0एच0डी0 डिग्री के षोध-प्रबंध (डॉ0श्याम कष्यप) से लिए गए हैं।*
6. *"हिन्दी साहित्य का इतिहास", रामचन्द्र शुक्ल ; सं0 2005, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ0 309*
7. *"हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता", सं0 प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित , पृ0 3*